Vol 4 Issue 4 May 2014

ISSN No : 2230-7850

# International Multidisciplinary Research Journal

# *Indian Streams Research Journal*

Executive Editor
Ashok Yakkaldevi

Editor-in-Chief
H.N.Jagtap

**Welcome to ISRJ**

**RNI MAHMUL/2011/38595** **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

## *International Advisory Board*

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Catalina Neculai
University of Coventry, UK

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Horia Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest,Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

.....More

## *Editorial Board*

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

**Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India**
**Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.net**

Indian Streams Research Journal
ISSN 2230-7850
Volume-4 | Issue-4 | May-2014
Available online at www.isrj.net

# आधुनिक हिन्दी ग़ज़ल में राष्ट्रीय चेतना

*अंजेला सिंगारे*

सहा. प्राध्यापक, हिन्दी शा. कला एवं विज्ञान महाविद्यालय, रतलाम (म.प्र.)

***सारांश :-*** आधुनिक हिन्दी ग़ज़लकारों ने अपनी सजगता एवं दायित्यपरकता का परिचय प्रस्तुत करते हुए राष्ट्रीय चेतना से अनुप्राणित ग़ज़लों का प्रणयन किया ये ग़ज़लें मातृभूमि तथा राष्ट्र के प्रति गहरी रागात्मकता से ओत–प्रोत हैं। इन ग़ज़लों में एक ओर देश के गौरवशाली अतीत की झलक है वहीं दूसरी ओर वर्तमानकालीन विषम स्थितियों की बानगी भी है। ये ग़ज़लें राष्ट्रीय स्वाभिमान का बोध कराने के साथ–साथ मौजूदा विघटनकारी ताकतों से लोहा लेने हेतु प्रेरक आलम्बन बन कर सामने आती है। ये हिन्दी ग़ज़लें देश और समाज के प्रति अपेक्षाकृत अधिक गंभीर चिंतन दृष्टि लिये हैं।

***प्रस्तावना :***

यह एक सर्वज्ञात ऐतिहासिक तथ्य है कि भारत एक अतिशय गौरवशाली अतीत का अधिपति रहा है। अपने अकूत वैभव के कारण सोने की चिड़िया तथा असीम आध्यात्मिक ज्ञान के कारण विश्व गुरू की संज्ञा से अभिहित इस देश की पूण्यभूमि विविध अवतारों एवं महापुरूषों की लीला–स्थली तथा अनेकानेक सन्तों, मनीषियों, तत्व चिन्तकों, दार्शनिकों एवं नाना कलाओं–विद्याओं व ज्ञान–विज्ञान की शाखाओं–प्रशाखाओं से सम्बध्द मर्मज्ञ विद्वानों की कर्मस्थली रही है। यहाँ की विलक्षण ज्ञान सम्पदा के प्रति दुर्निवार आकर्षण से खिंच कर अनेक जिज्ञासु विदेशी इस भूमि पर आए और अभीप्सित लक्ष्यों को प्राप्त करने में सफल हुए। यही नहीं यहाँ की विपुल धन सम्पदा के प्रति आकर्षित होकर अनेक विदेशी आक्रमणकारी जातियाँ भी इस भूमि पर आई और जी भरकर यहाँ की सम्पदा से उन्होंने अपने खजानें भरे। कहना न होगा कि इन जातियों की अंतिम कड़ी मुगल और अंग्रेज रहे, जिन्होंने इस देश पर दो सौ साल तक हुकूमत की। उल्लेखनीय है कि मुगल तो कालान्तर में यहाँ की माटी में रच–बस गए किन्तु अंग्रेज अपना बर्बर दमन चक्र चलाते हुए इस देश को निरन्तर लूटते रहे। उनके अमानुषिक–निर्मम अत्याचारों के खिलाफ एक लम्बी व कठिन लड़ाई छेड़ कर अनगिनत देशभक्तों व क्रांतिकारों ने अपने सर्वस्व का उत्सर्ग करते हुए देश को परतन्त्रता की बेड़ियों से मुक्त कराया।

स्वाधीनता संघर्ष के सुलगते दिनों में कवि साहित्यकार गीत और ग़ज़लकार भी खामोश या तटस्थ नहीं रहे बलिक उन्होंने अपने ओजस्वी व प्रखर लेखन द्वारा राष्ट्रीय चेतना का भरपूर संवर्ध्दन किया। देश और समाज हित में जागरूक साहित्यकार अपनी सक्रिय व प्रेरक भूमिका अदा करने मे आगे रहे। आजादी के लिये लड़ी गई लड़ाई में उन्होंने अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका निभाई तथा ब्रिटीश शासन के विरूध्द संघर्ष का शंखनाद करते हुए सामान्य जन तक को प्राणोत्सर्ग के लियें प्रेरित किया। कई क्रांतिकारियों ने भी गीतों और ग़ज़लों के द्वारा राष्ट्रीय चेतना की आग को प्रज्वलित करने के साथ–साथ अपने प्रबल राष्ट्रभक्ति भाव को अभिव्यक्ति दी। प्रख्यात क्रांतिकारी रामप्रसाद बिस्मिल की ग़ज़ल की निम्न पंक्तियाँ इस तथ्य की द्योतक है –

सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है
देंखना है जोर कितना बाजू–ए–कातिल में है [1]

मुज्तरिब की ग़ज़ल की निम्न पंक्तियाँ भी राष्ट्रभक्ति के उद्दाम भाव को प्रकट करती है –

कौम के खादिम की है जागीर वन्दे मातरम्
है वतन के वास्ते अक्सीर वन्दे मातरम्
जालिमों को है उधर बंदूक पर अपनी गुमान
है इधर हम बेकसों का तीर वन्दे मातरम [2]

स्वतंत्रता के उत्तरवर्ती काल में भी राष्ट्र प्रेम की भावनाओं से ओत–प्रोत काव्य रचनाओं का सृजन करने वाले हिन्दी कवियों की तुलना में हिन्दी ग़ज़लकार पीछे नहीं रहे और उन्होंने राष्ट्रीय चेतना का संवर्ध्दन करने वाली कई प्रेरक ग़ज़लें लिखीं। इन ग़ज़लों में जहाँ एक ओर स्वाधीनता संघर्ष एवं उसमें अपने प्राण न्यौछावर करने वाले वीर शहीदों की भीगी स्मृतयाँ हैं वहीं दूसरी ओर स्वातंत्र्योत्तर भारत के पटल

पर घटित होते परिवर्तनों, चुनौतियों एवं विघटित होते मूल्यों की आहटें भी है। आधुनिक कालीन हिन्दी ग़ज़लों में मातृभूमि अभिवन्दन, राष्ट्र महिमा का गौरवगान, शहीदों के बलिदानों का पुण्य स्मरण, राष्ट्रीय एकता व अखण्डता, साम्प्रदायिक सौहार्द्र व सद्भाव, अनन्य राष्ट्र प्रेम, राष्ट्र ध्वज एवं लोकतंत्र का सम्मान, राष्ट्रहित मूलक मूल्यों का संस्थापन, वर्तमान विषम स्थितियों के प्रति चिन्ता तथा राष्ट्र के मंगल भविष्य की आशा जैसे विषयों की अभिव्यक्ति हुई है।

राष्ट्रीय चेतना का निहितार्थ मूलतः मातृभूमि के साथ जुड़ा है। यह निर्विवाद सत्य है कि जननी जन्म भूमि की महिमा सर्वोपरि है। उसका दर्जा स्वर्ग से भी कहीं अधिक ऊँचा है। चिरकाल से चली आई अवधारणा 'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी' – इसी तथ्य को चरितार्थ करती है। जननी जन्म–भूमि अहर्निश पूज्य और वंदनीय है। इसकी गोद में ही खेलकर हमस ब बड़े हुए हैं। इसके ही अन्न–जल से हमारी देह पोषित होती है। इसके ऋण से बारम्बार जन्म लेकर भी उऋण नहीं हुआ जा सकता। इसकी मिट्टी की रज सदा से ही राष्ट्र भक्तों के मस्तक की शोभा बनती आई है। स्मरणीय है कि आजादी के दीवानों ने मौत को गले लगाने से पहले अपनी मातृभूमि की माटी को ही चूमने और माथे पर लगाने की ख्वाहिश व्यक्त की थी। इस पावन माटी का कण–कण कुकुंम चंदनवत् है। कहना न होगा कि जो स्वदेश की माटी से प्यार करता है वही स्वदेशवासी अपने भाइयों से प्यार कर सकता है, उनके साथ शांतिपूर्वक रह सकता है, उनके साथ प्रगति पथ पर अग्रेसर होते हुए सर्वकल्याण की कामना कर सकता है – बृजकिशोर पटेल की ग़ज़ल की निम्नांकित पंक्तियाँ इस भाव को सुंदर ढंग से व्यंजित करती है –

मिट्टी वतन की माथे का चंदन बनाए रखना
सभी के लिये प्यार का बंधन बनाए रखना
जीवन हो सबका सुखमय सबको मिले सम्मान
सभी के लिये सहयोग का मन बनाए रखना।[3]
चाहे कोई किसी भी जाति या वर्ग का हो

किसी धर्म या मजहब का अनुयायी हो, किसी भी मत या विचारधारा का अनुगामी हो – इससे कोई अन्तर नहीं पड़ता मातृभूमि के प्रति सबके दायित्व एक समान है। उसकी मान–मर्यादा की, उसकी आन–बान की रक्षा करना सभी देशवासियों का प्रथम धर्म है। यह धर्म–मन्दिरों, मस्जिदों, चर्चो और गुरूद्वारों से तथा तमाम धर्मग्रन्थों और पोथियों से ऊँचा है। इस राष्ट्र धर्म को अंगीकार करना राष्ट्रप्रेम की अनिवार्य शर्त है।

आनन्दसिंह आनन्द की ग़ज़ल की निम्न पंकियाँ मातृभूमि की सर्वोच्च महिमा का गुणगान इस तरह से करती है –

मसला जो मातृभूमि का है, है धर्म से बड़ा
वो ऋग्वेद से बड़ा है, बड़ा है कुरान से।[4]

भारत की महिमामयी पावन धरा – अनेक अवतारों की लीलास्थली रही है। यह धरा अनगिनत सन्तों, भक्तों, कलाकारों, कवियों और शूरवीरों की भी कर्मस्थली रही है। यहाँ पैदा हुए सपूतों ने धर्म, जाति, मत और विचारधारा आदि की संकीर्णताओं से परे हटकर, समष्टिगत हित को अपना सर्वोपरि लक्ष्य माना और इस देश को अनवरत जोड़ने व सँवारने का स्तुत्य उपक्रम किया। आज जबकि जाति, धर्म, वर्ग, भाषा, विचारधारा तथा क्षेत्रीयता आदि के नाम पर जो अलगाववादी प्रवृत्तियाँ सिर उठा रही है और देश की अखण्डता के लिये दिन–ब–दिन एक बड़ा खतरा बनती जा रही है, ऐसे विषम माहौल में माँ भारती के महान् सपूतों और उनके सत्कृत्यों का पुनरावलोकन अत्यन्त जरूरी है – इस सन्दर्भ को उठाती परशुराम शुक्ल की ग़ज़ल की ये पंक्तियाँ गौरतलब है –

ये राम का वतन है, गौतम का चमन है
नानक की पाक धरती, हिन्दोस्ताँ हमारा
ये मीर की ग़ज़ल है, मीरा का गीत है,
ये है कबीर की बानी, हिन्दुस्ताँ हमारा
बिस्मिल, सुभाष, नेहरू, अरविन्द और गाँधी
सब कह गए जहाँ से हिन्दोस्ताँ हमारा
मन्दिर भी कह रहा है, मस्जिद भी कह रही है
यही चर्च कह रहा है, हिन्दोस्ताँ हमारा
हिन्दू का ये वतन है, मुस्लिम का वतन है
हम इन्साँ का ये वतन है, हिन्दुस्ताँ हमारा ।[5]

भारत की वीर–प्रसूता धरती पर अगणित योध्दा हुए जिन्होंने अपने शौर्य और पराक्रम से गौरवशाली इतिहास की बेमिसाल इबारतें रचीं। अपनी मातृभूमि की हिफाजत के लिये दुश्मनों से लोहा लेते हुए इन राष्ट्रभक्त रणबाँकुरो ने हँसते – हँसते मृत्यु का वरण कर लिया, लेकिन राष्ट्र की आन पर आँच नहीं आने दी। इनके अनूठे शौर्य और बाँकपन से स्वयं मृत्यु भी शोभित हो उठी। निजी सुख और स्वार्थ को तिलांजलि देकर जिन वीर शहींदो ने अपना सर्वस्व, राष्ट्र के सम्मान की वेदी पर उत्सर्ग कर दिया, उनके ऋण को चुका पाना सर्वथा असंभव है। उन महान् शहीदों के उत्सर्ग को न किसी सम्मान या पारितोषिक से आँका जा सकता है, न सोने–चाँदी के तमगों से। परतन्त्रता के

अन्धतिमिर से अन्तिम क्षण तक जूझने वाले इन दीपों के कारण ही स्वतंत्रता के स्वर्णिम प्रभात की किरण इस राष्ट्र के आलोक विकीर्ण कर पाने में सफल हुई – आचार्य भगवत दुबे की ग़ज़ल की ये पंक्तियाँ अमर शहीदों की शहादतों को भाव प्रवण रूप से व्यक्त करती है–

दुश्मनों से छीनकर वापस वतन देकर गए
मौत को भी वे रणबाँकुरे बाँकपन देकर गए
स्वर्ण तमंगों से चुकेगा, कर्ज क्या उनका भला
राष्ट्र को निस्वार्थ जो मन प्राण धन देकर गए
जो दिये लड़ते गुलामी के अँधेरों से रहे
स्वाभिमानी सोच की उजली किरण देकर गए ।[6]

राष्ट्र की मूल शक्ति है – एकता। यह एकता ही उसके अखण्ड व ओजस्वी स्वरूप का आधार है। अथर्ववेद की एक ऋचा में कहा गया है – संमगच्छध्वं, संवदध्वं, सं वो मनासि जायताम् अर्थात् – तुम सब एक हो जाओ, सब एक ही विचार वाले बन जाओ। वैदिक ऋषि की यह महान् वाणी प्रत्येक देशवासी के लिये प्रेरणा का मूल–मंत्र बनना चाहिए। विविध देवी–देवता देवालय, इबादतगाहें, उपासना पध्दतियाँ, धार्मिक रीतियाँ व धर्म ग्रंथो के विधान भले ही पृथक–पृथक हों लेकिन वे राष्ट्र की एकता में बाधक न बने – यह सबसे महत्वपूर्ण बात है। भारत रंग–बिरंगे फूलों के उपवन की भाँति विविध धर्मो और जातियों के लोगों का देश है। इस वैविध्य में ही इसका सौन्दर्य निहित है। आज कतिपय दिग्भ्रमित, कुत्सित मनोवृत्ति वाले स्वार्थी तत्वों के द्वारा इस सौन्दर्य को विकृत करने की मंशा से विघटनकारी प्रयास किये जा रहे हैं। ऐसे तत्वों से सावधान रहना व इस तरह के कृत्यों का प्रतिकार करना – प्रत्येक भारतवासी का प्राथमिक कर्तव्य है। राष्ट्र एवं समाज विरोधी तत्वों की कुटिल चालों को तभी नाकाम किया जा सकता है जब सभी एकजुट होकर रहें और निजी स्वार्थो से अलग हटकर राष्ट्रीय हित की दिशा में सोचें – ओमप्रकाश मिश्र 'कचन' की ग़ज़ल की निम्न पंक्तियाँ इसी प्रेरक विचार को रेखांकित करती है –

जग कहता भारतवर्ष जिसे उपवन है बहुरंगों का
कान्हा के इस वृन्दावन में, विघटन बबूल बोए न कोई
गैरों की बातों में आकर अब और न बँटे यह आँगन
एकता ही हमारी ताकत है यह मूलमंत्र भूले न कोई ।[7]

आज के समय की सबसे अहम् माँग यह है कि हम अपने क्षुद्र विवादों, मतभेदों, झगड़ों और ऊँच–नीच के संकीर्ण विचारों से ऊपर उठाकर राष्ट्रहित को सर्वोपरि माने तथा उसी को तरजीह दे एवं भावी पीढ़ियों के लिये अनुकरणीय आदर्श की जमीन तैयार करें। देश की एकता व अखण्डता सबके लिये सर्वोपरि हो। समस्त देशवासी सद् आशय व सद् विचार लेकर ऐसे कर्मो में प्रवृत्त हों, जिनसे आपसी प्रेम व भाईचारे की भावना में इजाफा हो, साथ ही एक–दूसरे के हित और सुख का सुदृढ़ आधार निर्मित हो – अशोक गीते की निम्न ग़ज़ल पंक्तियाँ इसी भाव को व्यक्त करती हैं –

स्व देश की एकता का स्वर बनों
बन सको तो नींव का पत्थर बनों
प्रेम हो मधुर भावनाएँ हों मुखर
दे सकूँ हर एक को वो घर बनों ।[8]

देश की एकता–अखण्डता के लिए साम्प्रदायिक सौहार्द, पारस्परिक प्रेम, सद्भाव, सहकार व सामंजस्य का होना अत्यन्त आवश्यक है। यदि इनमें किसी भी तरह की कमी होती है तो उसका प्रभाव पूरे समाज और देश पर पड़ता है। उल्लेखनीय है कि आजादी के बाद विभाजन व उससे उपजे मजहबी उन्माद की वजह से साम्प्रदाकि दंगों की जो आग फैली उसकी लपटों ने पूरे देश को प्रभावित किया था। यही नहीं बाद के वर्षो में भी कभी मन्दिर–मस्जिद तो कभी भाषा और प्रान्तवाद तथा अगड़ो–पिछड़ों आदि के मुद्दों को लेकर विग्रह की आग यहाँ–वहाँ देखने को मिलती रही। कट्टर–धर्मान्ध तत्वों तथा कुटिल व स्वार्थी राजनीतियों का इस आग को भड़काने में काफी हाथ रहा। जाति, वर्ण, वर्ग, भाषा, धर्म, सम्प्रदाय व विचारधारा विशेष के नाम पर रह–रहकर सिर उठाती मानवताविरोधी बनाम राष्ट्र विरोधी ताकतों का प्रतिकार – आज की सबसे बड़ी जरूरत है। समस्त देशवासियों को आज मिलजुलकर एक ऐसे आदर्श भारत की संकल्पना को मूर्त रूप देना है, जिसमें आपसी कलह, कटुता, घृणा, विद्वेष और रंजिश के लिये कोई स्थान न हो। सभी हिलमिल कर प्रेम व सद्भावनापूर्वक एक साथ रहे और देश की ताकत बने। राष्ट्रप्रेम के उदात्त भाव से अभिप्रेरित, अखण्ड और एकीकृत भारत की संकल्पना को रूपाकार देने वाली कई ग़ज़लें हिन्दी ग़ज़लकारों ने लिखी हैं। ओमप्रकाश मिश्र 'कंचन' की ग़ज़ल पंक्तियाँ दृष्टव्य है –

मन्दिर भी रहे, मस्जिद भी रहे दोनों में से टूटे न कोई
गंगा भी बहे, कावेरी भी, दोनों में से सूखे न कोई
संगे अस्वद हो या हो शिवलिंग सजदे में तो इंसान है
इंसानी रिश्तों की पूँजी का कोष कभी लूटे न कोई ।[9]

आज देश को बाँटने तथा भोलीभाली जनता को बहकाकर फिरकेवाराना फसादों में ढकेलने वाले कुटिल तत्वों का दृढ़ प्रतिकार

करने और उनको मुँह तोड़ जवाब देने की जरूरत है। आज दिलों को दिलों से जोड़ते हुए जाति, वर्ग और मजहबगत भेद–भाव को भुलाकर सूर और रसखान के तराने साथ–साथ गाने की जरूरत है। सबसे बड़ा सच यह है कि आपसी प्रेम, भाईचारे और सौहार्द्र की सरस स्वर लहरियाँ ही राष्ट्रीय एकता व अखण्डता के सुन्दर संगीत की संरचना कर सकती है – डॉ. राकेश सक्सेना की निम्न ग़ज़ल पंक्तियाँ इन्हीं भावों की सुन्दर व्यंजना करती है –

राग अनुराग लाओ यही एकता
गीत मिलजुल के गाओ यही एकता
जाति, भाषा, धरम में न बाँटो वतन
मन को मन से मिलाओ यही एकता
खून की होलियाँ जो रहे खेलते
मन उनका मिटाओ यही एकता
भेद हिन्दू मुसलमाँ का मन में न हो
सूर–रसखान गाओ यही एकता ।[10]

राष्ट्र विरोधी तत्वों और उनकी कुटिल मनोवृत्तियों की खिलाफत करते हुए हिन्दी ग़ज़लकारों ने ऐसी ग़ज़ले लिखी, जिनकी मूल प्रतिपाद्य – राष्ट्र की सर्वोपरिता रहो। ये ग़ज़लें सहज व सरल शैली में अपने कथ्य को प्रकट करती है। करोड़ों लोगों को अपने राष्ट्र से प्रेम करने तथा राष्ट्र को मंदिर, मस्जिद, धर्म, जाति व इनसे जुड़ी संकीर्णताओं से ऊपर मानने का पैगाम देती है – इस सन्दर्भ में मृदुला अरूण की निम्न ग़ज़ल पक्तियाँ गौरतलब हैं –

मन्दिर का हो सवाल या मस्जिद का प्रश्न हो
मजहब कोई बड़ा नहीं है – हिन्दोस्तान से ।[11]

हिन्दी ग़ज़लकार देश को बर्बादी और विनाश की ओर ढकेलने वाले विघटनकारी तत्वों से कहना चाहता है, कि वो अपनी नीच हरकतों से बाज आएँ। मंदिरों, मस्जिदों, गिरजों और गुरूद्वारों को अपनी नापाक गतिविधियों के लिये इस्तेमाल न करे। राम, मुहम्मद, ईसा व गुरूनानक आदि को माननेवाले विभिन्न जाति, धर्म व मजहब के करोड़ों लोग इस देश में सदियों से साथ–साथ रहते आए हैं और आगे भी रहते रहेंगे। उनके बीच फूट के बीज बो कर देश की अस्मिता को संकट में डालने वाले कुटिल व स्वार्थी तत्वों के खिलाफ वो अपना गहरा रोष प्रकट करता है। सूर्यदेव पाठक 'पराग' की ग़ज़ल की निम्नांकित पंक्तियाँ इस सन्दर्भ को शिद्दत से रेखांकित करती हैं –

रहने दो आबाद वतन को मत बाँटों
करने को बर्बाद वतन को मत बाँटो
मंदिर, मस्जिद, गिरजा हो या गुरूद्वारा
रहे सदा आजाद वतन को मत बाँटो
राग मुहम्मद ईसा और गुरूनानक से
करने दो फरियाद वतन को मत बाँटो
जाति धर्म मजहब तो भिन्न रहेंगे ही
है काफी तादाद वतन को मत बाँटो ।[12]

साम्प्रदायिक सद्भाव, प्रेम, भाईचारे और अमन की इससे अधिक श्रेष्ठ पहल और क्या हो सकती है कि एक मजहब के लोगों द्वारा दूसरे मजहब के लोगों की भावनाओं का सम्मान किया जाए। इस तरह की पहल से ही राष्ट्रीय एकता व अखण्डता के शिल्प को गढ़ा जा सकता है – मुनव्वर अली 'ताज' की ग़ज़ल की निम्न पंक्तियाँ इसी भाव को प्रकट करती है–

इस तरह से हिन्दोस्ताँ को अमन का पैगाम दो
हिन्दुओं को दो खुदा और मुस्लिमों को राम दो ।

आज के समय की सबसे बड़ी माँग यह है कि धर्म या मजहब की संकीर्णताओं को दिलो–दिमाग से निकाल कर इंसानियत को सँवारने की कोशिश हो, क्यूँकि आदमी का हिन्दू–मुसलमान या सिक्ख–इसाई होना उतना महत्वपूर्ण नहीं है, जितना महत्वपूर्ण है – सच्चा और खरा इन्सान होना। इस सच्ची व खरी इन्सानियत से ही राष्ट्र का निर्माण संभव है। मंदिर मस्जिद, चर्च या गुरूद्वारे में शीश झुकाने की बनिस्बत राष्ट्र देवता के सम्मुख, नतमस्तक होना कहीं अधिक महत्वपूर्ण है। प्रत्येक देशवासी के भीतर राष्ट्र के प्रति गहन निष्ठा व समर्पण का भाव हो तथा उसके लिये किसी धर्म या मजहब विशेष की बजाय अपने राष्ट्र का सम्मान व गौरव सर्वोपरि हो। ऐसे ही भावों को व्यंजित करती नरेन्द्रराय 'नरेन' की ग़ज़ल पंक्तियाँ हैं –

धर्म–मजहब को दिमागों से भुलाया जाए

आदमी को सही इन्सान बनाया जाए
देश का मान ही मजहब हो हर किसी का
सर झुकना हो तो इस पर ही झुकाया जाए । [13]

निजी जिन्दगी, भौतिक संसाधन, पद, प्रतिष्ठा और प्रसिध्दी तथा इनसे जुड़े सुखों की अपनी–अपनी अहमियत हो सकती है, लेकिन बड़ा सच यह है कि राष्ट्र का दर्जा सर्वोच्च है। पेशे या आजीविका कर्म की दृष्टि से समाज में किसी की कैसी भी भूमिका क्यूँ न हो लेकिन अपने राष्ट्र के हित प्रत्येक नागरिक में निष्ठा व समर्पण का भाव अनिवार्यतः होना चाहिये, क्योंकि राष्ट्र के कारण ही व्यक्ति का अस्तित्व होता है। प्रत्येक देशवासी को अपने भारतीय होने पर गर्व की अनुभूति होनी चाहिये। यह गर्वानुभूति ही राष्ट्र प्रेम की परिचायिका है। एक सच्चे देशभक्त की प्रथम और अन्तिम आरजू यही होती है कि – देश सदा सर्वदा खुशहाल और आबाद रहे तथा सर्वस्व अर्पण का मोल चुका कर भी उसकी सेवा का सौभाग्य हासिल हो – हर्षवर्ध्दन आर्य की ग़ज़ल की निम्न पंक्तियाँ इस भाव बखूबी प्रकट करती है –

या खुदा है आरजू आबाद ये गुलशन रहे
देश सेवा में हमेशा ये मेरा तनम न रहे
मैं अगर जिन्दा रहूँ तो इस तरह जिन्दा रहूँ
आँधियों में दीप जैसे शान से रोशन रहे
जब मरूँ तो माँ के कण–कण में समाऊँ इस तरह
ज्यों महकता देवता के भाल पर चन्दन रहे । [14]

राष्ट्र महज किसी कागज पर स्याही से उकेरा गया एक नक्शा या मानचित्र मात्र नहीं होता बल्कि वह लाखों–करोड़ों लोगों की भावनाओं का प्रतीक, उनकी अस्मिता की पहचान और स्वाभिमान का प्रतिरूप होता है। उसके खातिर जीने और उसकी खातिर मरने में राष्ट्रभक्त अपने जीवन की चरितार्थता खोजते हैं। वतन से मुहब्बत करने वाले हजारों–लाखों मील दूर दुनिया के किसी भी कोने में क्यूँ न चले जाएँ अपनी मिट्टी से उनका नाता जीवन पर्यन्त रहता है – कुँवर बेचैन की ग़ज़ल की निम्नांकित पंक्तियाँ इसी भाव को शब्द देती है –

गुलों में ज्यों चमन की खुशबुएँ मौजूद रहती हैं
कहीं भी जाऊँ, वतन की खुशबुएँ मौजूद रहती है
अगर सच्ची मुहब्बत है, तो ये बात भी सच है
विरह में भी मिलन की खुशबुएँ मौजूद रहती हैं
मैं अपने गीत गाता हूँ तो लगता है कि इनमें भी
तुम्हारे ही भजन की खुशबुएँ मौजूद रहती है । [15]

हिंदी ग़ज़लकार देशवासियों से आव्हान करता है किवे अपने देश से अनिवार्यतः प्यार करना सीखें, उसके लिये जीने और मरने का पाठ पढ़े। निजी स्वार्थ और सुख के संकुचित सोच से ऊपर उठकर देश हित में सोचें तथा उसके उत्तरोत्तर अभिवर्ध्दन के लिये अनवरत प्रयत्न करें क्यूँकि ऐसा उदात्त सोच तथा ऐसे उदार प्रयत्न ही देश की चहुँमुखी एवं उज्ज्वल भविष्य का आधार बन सकते हैं। इस देश में जन्म लेकर यदि इससे प्रेम न कर पाए तो जीवन के अन्तिम छोर पर, ग्लानि और अनुताप के सिवाय हाथ में कुछ भी शेष न होगा – इसी तरह के भावों की व्यंजना करती मंजू मनीषा की ग़ज़ल पंक्तियाँ हैं –

जितना चिंतित हो तन और मन के लिये
उतना ही सोचो अपने वतन के लिये
देश का ये चमन खूब फूले–फले
सौ–सौ जतन करो इस चमन के लिये
देश प्रेमी बनो – देश के वासियों
वर्ना तरसोगे दो गज कफन के लिये । [16]

मौजूदा हालातो में जिस तरह की विषम चुनौतियाँ आए दिन देखने को मिल रही है, जिस तरह के दुखद व दुर्भाग्यपूर्ण घटनाक्रम दिन–ब–दिन घटित हो रहे हैं उनके बीच दृढ़ता और सख्ती का रवैया अपनाकर ही राष्ट्र के वजूद को बचा कर रखा जा सकता है। यह बात प्रत्येक देशवासी को भली–भाँति समझनी होगी कि राष्ट्र विरोधी ताकतों की साजिशों के मायावी जाल से खुद को बचाकर उनकी ही शैली में उनको मुँह तोड़ जवाब देना – वर्तमान समय की अपरिहार्यता है। यदि देश का एक–एक नागरिक निजी सुख व लाभ की लालसा से ऊपर उठ, देश की अस्मिता व उसके वजूद को सर्वोपरि मान प्राण–पण से उसकी रक्षा के प्रति कृत संकल्पित हो जाए तो देशद्रोही तत्वों की व दुश्मन पड़ोसियों की कोई भी नापाक चाल कामयाब नहीं हो सकती। कहना न होगा कि देशप्रेम की मय के प्याले पीने वाले मतवालों के आगे बड़ी से बड़ी नापाक ताकत हाथ मलती रह जाती है – शेरजंग गर्ग की ग़ज़ल की निम्न पंक्तियाँ इसी तथ्य को बखूबी व्यक्त करती हैं –

नर्म रहकर न यहाँ बैठना चलना होगा

वक्त को अब सख्त तरीकों से बदलना होगा
जो हमारे लिये साजिश में रचे दुनिया ने
उन खिलौनों से नहीं दिल का बहलना होगा
इक जरूरत है मेरी कौम का जिन्दा रहना
मौत के खूनी पंजों से निकलना होगा
देश के प्रेम का हम जाम पियें–खूब पियें
जलने वालों को फकत हाथ ही मलना होगा । [17]

यह एक विचारणीय बात है कि आजादी के उपरान्त विगत कुछ दशकों में देश में निरन्तर राजनैतिक शुचिता का क्षरण देखने को मिला है। नैतिक व चरित्रिक मूल्यों में गिरावट आई है। कुर्सी व सत्ता के आकांक्षी राजनेताओं ने अपनी लक्ष्य सिध्दि के लिये भाँति–भाँति के मुद्दे व तरह–तरह के सवाल उठाकर भोली–भाली जनता में कटुता, विद्वेष और अलगाव का जहर घोला है। यह कुटिल मनोवृत्ति राष्ट्रीय हितों के लिए घातक है। हिन्दी ग़ज़लकारों ने इस वृत्ति की पुरजोर खिलाफत की है। उन्होंने इस तथ्य का प्रतिपादन करना चाहा है कि देश के लोग, चाहे किसी भी जाति या धर्म के क्यूँ न हों, झगड़ा–फसाद कतई नहीं चाहते, बल्कि हिल–मिलकर प्रेम और शान्तिपूर्वक रहना चाहते हैं। हिन्दी ग़ज़लकार ऐसे कुटिल तत्वों का दृढ़ प्रतिरोध करता है। वो चाहता है कि भोली–भाली जनता की ऐसे तत्वों के खिलाफ खामोशी टूटे – इस सन्दर्भ को रेखांकित करती परशुराम शुक्ल की ग़ज़ल पंक्तियाँ हैं –

हिन्द के हिन्दु मुसलमाँ कुछ फ़क्र रखते नहीं
मगर वो दंगे कराते हैं और सब खामोश हैं
हमको क्या लेना – हो काबा कहीं, काशी कहीं
रोटियाँ नेता पकाते हैं और सब खामोश हैं । [18]

व्यापक राष्ट्रीय हितों की चिन्ता के परिप्रेक्ष्य में आधुनिक हिन्दी ग़ज़लकारों ने उन नकारात्मक स्थितियों को भी अपनी ग़ज़लों के कथ्य में शामिल किया है जो बीते साठ वर्षो के दौरान लगातार उत्पन्न हुई हैं और जिनके गहरे प्रभाव राष्ट्र के जनजीवन में दूर–दूर तक देखने को मिले हैं। यद्यपि यह सर्वज्ञात सत्य है कि इन साठ वर्षो में भारत ने अनेकानेक क्षेत्रों में अभूतपूर्व तरक्की कर दुनिया में काफी ऊँचा मुकाम हासिल किया है व अपनी एक विशिष्ट पहचान कायम की है, लेकिन दूसरी ओर यह भी एक बड़ी सच्चाई है कि उसने अपनी मूल्यगत ऊँचाइयों को भी काफी हद तक खोया है। भौतिकता की चकाचौंध व पाश्चात्य सभ्यता के रंग में दिनों–दिन रँगती जा रही भारतीयों की मानसिकता ने उन्हें परम्परागत स्वदेशी मूल्यों से लगातार दूर किया है। तमाम मूल्य और आदर्श उत्तरोत्तर अपनी चमक खोकर हाशिये पर उतरते जा रहे हैं। दुर्भाग्य से स्वाधीनता के बाद की राजनीति में जिस तरह के व्यक्तियों का बहुतायत में प्रवेश हुआ, उनके सोच तथा क्रियाकलापों ने राष्ट्रीय गरिमा को काफी ठेस पहुँचाही। लोलुपता व स्वार्थ की वृत्तियों से परिचालित ऐसे राजनेताओं ने तमाम नैतिक व चारित्रिक मूल्यों को ताक पर रख सत्ता प्राप्ति के लिये निम्न स्तरों तक उतरने से भी गुरेज नहीं किया। देश की स्थिति दुल्हन की उस पालकी के सदृश हो गई, जिसे उठाने वाले कहार ही खुद लूट लें – गोपालदास 'नीरज' की ग़ज़ल की निम्नल पंक्तियाँ इसी तथ्य को प्रकट करती हैं –

ज्यों लूट लें कहार ही दुल्हन की पालकी
ळालत यही है आजकल हिन्दोस्तान की । [19]

कोई भी राष्ट्र दुनिया के आगे स्वाभिमानपूर्वक अपना मस्तक ऊँचा उठाकर तभी रह सकता है, जब उसके एक–एक नागरिक के पास रोजी–रोटी के पर्याप्त संसाधन उपलब्ध हों और वह सुखी व सन्तुष्ट जीवन जी सके। इस सन्दर्भ में यदि भारत की बात की जाए तो स्थिति पूर्णतः सकारात्मक व अपेक्षानुकूल नहीं कही जा सकती। आजादी के साठ साल बाद भी लाखों–करोड़ों लोग ऐसे हैं जो अपनी बुनियादी जरूरतों की पूर्ति तक नहीं कर पा रहे हैं और उनके लिये कठिन जद्दोजहद कर रहे हैं। गरीबी, अभाव, अशिक्षा, महँगाई, बेरोजगारी जैसी विषम समस्याएँ बीते साठ सालों के दौरान हर संभव कोशिशों के बावजूद पूरी तरह से खत्म नहीं की जा सकी हैं। इन समस्याओं से घिरे अनगिनत लोगों के लिये कोई भी सत्ताधारी दल या राजनेता कुछ खास नहीं कर पाया है। करोड़ों लोग आज भी गरीबी की रेखा के नीचे जीवन यापन करने पर विवश है। हिन्दी ग़ज़लकारों ने देश के इन समस्याग्रस्त लोंगो के दर्द को गहराई से महसूस करते हुए उसको अपनी ग़ज़लों में उतारा है। कोटि–कोटि बदहाल जनों को हिन्दुस्तान के रूपक में पेश करती दुष्यन्त कुमार की ग़ज़ल की पंक्तियाँ हैं –

कल नुमाइश में मिला वो चीथड़े पहने हुए
मैंने पूछा नाम, तो बोला कि – हिन्दुस्तान है । [20]

हिंन्दी ग़ज़लकार अतीत के उन गौरवशाली पृष्ठों को उलटकर खिन्न हो उठता है जिनमें भारत 'सोने की चिड़िया' के रूप में संज्ञायित हुआ है। मौजूदा समय में चतुर्दिक व्याप्त विसंगतियाँ और विद्रूप उसको वेदना और क्षोभ से भर देते हैं। दरिद्रता, अभाव, उत्पीड़न व कठिन जीवन संघर्ष से जूझते अपने देश के आम आदमी की पीड़ा तथा दूसरी ओर निहित स्वार्थ दलगत राजनीति व भिन्न–भिन्न विचारधाराओं के खेमों में बँटे विषैली वृत्तियों वाले स्वार्थी राजनीतियों की जनहित के प्रति बढ़ती विमुखता को देख वो भीतर तक आहत हो जाता है – दिलीपसिंह 'दीपक' की ग़ज़ल की निम्न पंक्तियाँ इस आहत भाव को बखूबी प्रकट करती है –

यह देश था सोने की चिड़िया हमने किताबों में पढ़ा है
इन्हीं हाथों में अब भीख कटोरा देख रोने लगे हैं
हर गली में दो तीन खेमे, और खेमों में विषैले नाग
लोग अब फूलों की जगह तीखे काँटे बोने लगे हैं ।[21]

भारत की गणना दुनिया के सबसे बड़े लोकतन्त्र के रूप में होती है। यह विराट लोकतन्त्रात्मक देश हर तरह की योग्यता, प्रतिभा और क्षमता के होते हुए भी उन अभीप्सित लक्ष्यों को अब तक हासिल नहीं कर पाया है, जिनके स्वप्न आजादी के दिनों में राष्ट्र नायकों ने सँजोए थे। नाना प्रकार की विषम चुनौतियों से घिरे हमारे लोकतंत्र की स्थिति उस सुन्दर किताब की भाँति हो गई है, जिसका मुखपृष्ठ तो मोहक है, लेकिन भीतर के पन्ने फटे हुए हैं। राष्ट्रीयता के दुर्ग की स्थिती ऐसी है कि वो ऊपर से तो सुदृढ़ दिखाई देता है, लेकिन उसकी नींव के पत्थर अपनी जगह से हटे हुए हैं। राष्ट्र की एकता व अखण्डता की स्थिति वृक्षों के उस समूह के सदृश है जो एक दूसरे के समीप तो खडे हैं लेकिन उनके फल–फूल बँटे हुए हैं, बिखरे हुए हैं – ऐसे ही भावों को प्रकट करती ओमप्रकाश मिश्र 'कंचन' की ग़ज़ल पंक्तियाँ हैं –

मुखपृष्ठ चुम्बकीय है, इस लोकतंत्र का
भीतर निहारिये तो है – पन्ने फटे हुए
कैसे रहेगा सुदृढ़ दुर्ग राष्ट्र धर्म का
है नींव के पत्थर ही – जगह से हटे हुए
तरूवर तो खड़े हैं सभी – परस्पर सटे हुए
खेमों में मगर फूल हैं – क्यूँकर बँटे हुए ।[22]

आज देश में तेजी से विदेशी सभ्यता व जीवन शैली का प्रभाव बढ़ रहा है जिसकी वजह से स्वदेशी मूल्य अर्थहीन हो रहे हैं। भाईचारा, प्रेम स्नेह, सेवा, परोपकार, त्याग व राष्ट्रीयता जैसे भाव तिरोहित होते जा रहे हैं। चारों ओर एक अंधी व लोलुप स्पर्ध्दा दिखाई पड़ रही है, जिसकी संवेदनहीन पृष्ठभूमि में भ्रष्ट एवं अनैतिक आचरणों की वृत्तियाँ फल–फूल रही है। राष्ट्र की गौरवशाली सांस्कृतिक परम्पराओं व आदर्शों के प्रतिमान हाशिये पर उतरते जा रहे हैं। राजनेताओं के लिये कुर्सी व सत्ता की प्राप्ति ही जीवन का चरम लक्ष्य बन चुकी है। इस तथ्य की पूर्ति हेतु उनमें किसी भी स्तर व किसी भी सीमा तक जाने के लिये लेशमात्र भी हिचक नहीं रह गई है। इन दिन–ब–दिन टूटते बिखरते मानमूल्यों और अर्थहीन होते आदर्शों के वातावरण में आज देश का संवेदनशील आम नागरिक स्वयं को आहत और दुखी अनुभव कर रहा है। उसका मन उचाट हो गया है और वह अपने ही वतन में एक अजीब सा बेगानापन अनुभव करने लगा है– रसूल अहमद सागर बकाई की ग़ज़ल की निम्न पंक्तियाँ एक आम देशवासी के इसी कसक भरे एहसास को शब्द देती है –

हमें आजकल अपने वतन में अच्छा नहीं लगता
हमारा देश जैसा था, अब हमें वैसा नहीं लगता
ममता के महलों को खण्डहर किया राग द्वेषों ने
यहाँ थी प्रेम की बस्ती कभी – ऐसा नहीं लगता
भुलाए हमने सभी आदर्श सीता, राम, लक्ष्मण के
हमारा आचरण अब रघुवंश के घर का नहीं लगता ।[23]

राजनेताओं के निहित स्वार्थों ने देश के नक्शे तक को बदल डालने से गुरेज नहीं किया है। भाषावाद, प्रान्तवाद व क्षेत्रीयतावाद के समय–समय पर उठाए गए मुद्दे ऐसे स्वार्थी राजनेताओं के मस्तिष्क की ही उपज रहे हैं। आजादी के बाद देश ने विभाजन की जो भयावह विभीषिका झेली थी, उसके अनन्तर यह बेहद जरूरी था कि पुराने जख्मों को कुरेदा न जाए और देश को कौमी एकता और सद्भाव के सृदृढ़ सूत्र में आबध्द कर रखा जाए, लेकिन कुर्सी व सत्ता को हर कीमत पर हासिल करने की लालसा रखने वाले राजनेताओं ने इस राष्ट्रीय नजरिये से नहीं सोचा। उन्होंने भाँति–भाँति की राजनैतिक पार्टियाँ बनाकर भली–भाँति के हथकण्डे अपनाकर, एक–दूसरे को नीचा दिखाने व अपनी–अपनी और सर्वोपरिता सिध्द करने की कोशिशों से पूरे देश को ही एक जंग के मैदान में तब्दील कर दिया। लोकतन्त्र के आदर्श व राष्ट्रीय हितों के उदात्त लक्ष्य भुला दिये गए। राष्ट्र नायकों व शहीदों के स्वप्न सत्ता लोलुप नेताओं के स्वार्थपरक कृत्यों के पीछे कहीं गुम होकर रह गए – मदनमोहन उपेन्द्र की ग़ज़ल की निम्न पंक्तियाँ इस विडम्बना को इन शब्दों में प्रकट करती है–

कागज़ों में देश का नक़्शा बदलता जा रहा
किस क़दर टुकडों में बिखरा अपना हिन्दुस्तान
फासला बढ़ता नज़र आने लगा कुछ इस क़दर
फिर नई इक जंग के ख़ातिर सजा मैदान है
सरफ़रोशी की जिन्होंने, उनकी यादें रह गई
आसनों पर वो है– जिनकी कुर्सियाँ ईमान है ।[24]

राजनैतिक स्तर पर चतुर्दिक व्याप्त विसंगातियों व विकृतियों के कुत्सित परिदृश्यों को देखकर आज हर संवेदनशील देशवासी का

मन क्षुब्ध और आहत है। इस गहरी पीड़ा को आत्मसात कर हिन्दी ग़ज़लकार पूरे आत्मविश्वास के साथ देश के लोगों को आश्वस्त करता है कि – जब तक देश के प्रति निष्ठावान समर्पित व प्रतिबध्द कलमकार तथा उनकी कलम जिन्दा है, तब तक इस देश के उज्ज्वल भविष्य पर कभी ग्रहण नहीं लग सकता। चन्द कुटिल स्वार्थी व मैले मन वाले तत्वों की हीन और घिनौनी हरकतें इस महान देश की गौरव–गरिमा को कभी भी क्षतिग्रस्त नहीं कर सकती – रामगोपाल 'भारतीय' की ग़ज़ल की निम्न पंक्तियाँ इस आश्वस्ति को शब्द देती है –

कुछ घिनौनी हरकतों से ये मुल्क मिट सकता नहीं
है कलम जिन्दा अभी, जिन्दा अभी शायर भी है । [25]

राष्ट्र की गरिमा व प्रतिष्ठा को आघात पहुँचाने वाले या उसके लिये खतरा बने हुए ऐसे तमाम तत्वों को हिन्दी ग़ज़लकार सचेत करना चाहता है, जो दिन–रात सिर्फ अपने स्वार्थ की पूर्ति में लगे हुए हैं और अपने अवांछित कृत्यों से भीतर–ही–भीतर राष्ट्र की जड़े खोखली कर रहे हैं। वो स्पष्ट रूप से उन्हें चेतावनी देता है कि – यदि इस राष्ट्र की पावन भूमि पर जन्म लिया है तो, इसके प्रति सच्ची निष्ठा रखनी ही होगी, इसके ऋण की अदायगी करनी ही होगी, क्यूँकि इस भूमि ने ही अपनी गोद में उन्हें शरण दे रखी है और इसके ही अन्न–जल से उनके शरीर को पोषण मिल रहा है। संकीर्ण स्वार्थ, निज लाभ व वैचारिक कठमुल्लपन त्याग कर, व्यापक राष्ट्रहित के उदात्त सोच को अपनाना हर एक भारतवासी का प्रथम धर्म है। अस धर्म का दर्जा सभी धर्मो से कही ऊँचा है। जिसको इस राष्ट्र धर्म को अपनाने में आपत्ति है, उसको यहा रहने का भी कोई अधिकार नहीं है, वो खुशी–खुशी कहीं अन्यत्र जा सकता है – इस बेबाक विचार को प्रकट करती जीवितराम सेतपाल की प्रबल राष्ट्रप्रेम से ओत–प्रोत ग़ज़ल की पंक्तियाँ है. –

जन्म लिया भारत में तुमने, तो भारत का गुणगान करो
वर्ना जहाँ विश्वास जुड़ा है, तुरन्त वहीं प्रस्थान करो
अन्न यहा का खाया तुमने, पिया यहीं का है पानी
इसी की धूल में पले बढ़े तो इसी पर जीवनदान करो । [26]

मातृभूमि व राष्ट्र के प्रति अपने अंतःकरण की आस्था व सम्मान के प्रकटीकरण का माध्यम राष्ट्रीय ध्वज केवल विभिन्न रंगों में रंगा कपड़े का एक मामूली टुकड़ा भर नहीं होता, बल्कि वो राष्ट्र की अस्मिता व स्वाभिमान का प्रतीक होता है। कहना न होगा कि – भारत का राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा चिरकाल से इस महान् राष्ट्र की आन–बान व शान के परिचायक रूप में राष्ट्रभक्तों की समर्पित आस्था व निष्ठा का आलम्बन रहा है। इतिहास साक्षी है कि स्वाधीनता संघर्ष के सेनानियों ने व क्रांतिकारियों ने इसी तिरंगे को अपने हाथों में थाम – 'इन्क़लाब ज़िन्दाबाद' व 'भारतमाता की जय' के नारों से आकाश गुँजाते हुए अपने सीनों पर गोलियाँ खाई हैं। कालान्तर में चीन व पाकिस्तान से हुए युध्दों के दरम्यान भी तिरंगे की शान रखने के लियें अनेक वीर सैनिकों ने अपने प्राणों की आहुतियाँ दीं। केसरिया, सफेद व हरे रंगों के रूप में – क्रमशः शौर्य, शान्ति व खुशहाली के निहितार्थों का धारक हमारा राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा सदैव गर्वोन्नत रूप से आसमान की ओर सिर ऊँचा किये फहाराता रहे व उसकी आन–बान व शान पर किसी तरह की कोई आँच न आ सके– इस आस्था भाव का संचरण प्रत्येक भारतीय के अन्तःकरण में हो – यह कामना हिन्दी ग़ज़लकार ने की है – जीवितराम सेतपाल की ही एक ग़ज़ल की निम्न पंक्तियाँ इस सन्दर्भ में दृष्टव्य है –

जिस देश का है प्रतीक तिरंगा, उसका नाम है हिन्दुस्तान
झुकने न देंगे इसको ये है हमारी आन, बान और शान
रंग केसरिया सदा है कहता बलिदानों की कहानियाँ
रंग खुशहाली का सूचक हरा, श्वेत शान्ति का चक्र महान
इस तिरंगे पर हो गए निछावर अनेकानेक सपूत यहाँ
हम सब तत्पर हैं मिटाने इस पर अपनी प्यारी जान । [27]

भारत की गणना विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र के रू‍प में होती है। विविध जातियों, धर्मो, संस्कृतियों एवं विचारधाराओं की बहुरंगी छवियों से युक्त एक अरब से भी अधिक की विशाल आबादी वाले इस देश को लोकतंत्र ने एक सर्वथा पृथक पहचान प्रदान की है। यहाँ की संवैधानिक व्यवस्था ने नागरिकों को वो तमाम अधिकार प्रदान किये हैं, जिनके द्वारा भेदभाव रहित स्वतंत्र व आत्मसम्मानपरक जीवन का आधार निर्मित हुआ है। कहना न होगा कि – इस देश जैसी जीवन शैली तथा वैचारीक स्वाधीनता समूचे विश्वभर में लगभग दुर्लभ है। इस स्वाधीन देश के लोकतंत्र का अभीप्सित लक्ष्य – समाज के अन्तिम आदमी तक के हित का संवर्ध्दन करना है। यह लोकतंत्र समस्त देशवासियों की आशाओं–आकांक्षाओं का प्रतिरूप है, इस नाते सभी का यह कर्तव्य है कि – राष्ट्रध्वज व राष्ट्रभाषा के साथ ही साथ इस महान लोकतंत्र के प्रति विश्वास और आस्था का भाव अपने अन्तःकरण में अक्षुण्ण बनाए रखें। यह गहरी चिन्ता का विषय है कि आज समाज में राष्ट्रहित की बजाय स्वहित की भावना प्रधानता प्राप्त करती जा रही है – ऐसे में मौजूदा समय की सबसे बड़ी बरूरत राष्ट्रीयता के अनुरक्षण एवं अनवरत संवर्ध्दन की है – उमाशंकर शुक्ल 'आलोक' की ग़ज़ल की निम्न पंक्तियाँ इस सन्दर्भ में शिद्दत के साथ ध्यान आकर्षित करती है –

देश में गणतंत्र के सम्मान की बातें करें
राष्ट्र गौरव की पहचान की बातें करें
झुक न पाए ध्वज तिरंगा – यही संकल्प लें

जति मजहब से परे इन्सान की बातें करें
एक धरती एक नभ है एक सूरज की प्रभा
एकता की हम अनूठी शान की बातें करें
जो गरीबी–भुखमरी में है पड़े फुटपाथ पर
आओ हम उनके लिये उत्थान की बातें करें । [28]

हिन्दी ग़ज़लकार अपने राष्ट्र के सर्वांगीण उत्थान की कामना करते हुए समूचे विश्व में उसकी यश पताका को फहराते देखना चाहता है। उसकी दिली ख्वाहिश है कि विश्व के तमाम देशों के बीच हिन्दूस्तान की अपनी एक सर्वथा पृथक और विशिष्ट पहचान बनी रहे। दिन–ब–दिन वो अभूतपूर्व तरक्की व खुशहाली की सीढ़ियाँ पार कर बेमिसाल बुलन्दियों को हासिल करें, उसकी आवाज किसी से न दबे और सबसे अलग और ऊँची रहे – मधुकर शैदाई की ग़ज़ल की निम्न पंक्तियाँ राष्ट्र के सर्वतोंमुखी हित की इसी कामना को प्रकट करती है –

दिन ब दिन बढ़ती रहे, परवाज हिन्दुस्तान की
दब न सके कभी भी आवाज हिन्दुस्तान की । [29]

इस प्रकार राष्ट्रीय चेतना से अनुप्राणित हिन्दी ग़ज़लों ने अपने कथ्य में ऐसे तमाम विषयों को समाविष्ट किया है, जो न केवल राष्ट्र के गौरवशाली अतीत की झाँकी प्रस्तुत करते हैं वरन् मौजूदा समय व परिवेश में व्याप्त विसंगतियों एवं विषम स्थितियों के परिदृश्यों को भी सजीव रूप से प्रस्तुत करते हैं। इन विषयों का व्यापक फलक ग्रहण करनेवाली ये ग़ज़लें मातृभूमि तथा राष्ट्र के प्रति गहरी आस्था व निष्ठा का भाव लिये हैं तथा उन सभी ताकतों का दृढ़ प्रतिरोध करती है जो समाज व राष्ट्र हित के मार्ग में अवरोध उत्पन्न कर एकता व अखण्डता के लिये खतरा बन रही है। इन ग़ज़लों का प्रतिपाद्य जन मन में राष्ट्रीयता के उदात्त भाव को जागृत करना है।

## *सन्दर्भ ग्रंथ सूची*


1.राष्ट्रीय गीत – (संकलन) सरदार त्रिलोचनसिंह पृष्ठ–14
2.कादंबिनी , अगस्त 2000 , पृष्ठ–89
3.हिन्दी ग़ज़ल पंचदशी (भाग–4), संपा. – डॉ. रोहिताश्व अस्थाना ।
4.हिन्दी ग़ज़ल पंचदशी (भाग–4), संपा – डॉ. रोहिताश्व अस्थाना
5.ग़ज़ल – दुष्यन्त के बाद (भाग–1), संपा. दीक्षित दनकौरी, पृष्ठ–155
6.ग़ज़ल – दुष्यन्त के बाद (भाग–1), संपा. दीक्षित दनकौरी, पृष्ठ–127
7.ग़ज़ल – दुष्यन्त के बाद (भाग–1), संपा. दीक्षित दनकौरी, पृष्ठ–70
8.हिन्दी ग़ज़ल पंचदशी (भाग–4), संपा – रोहिताश्व अस्थाना, पृष्ठ–27
9.ग़ज़ल – दुष्यन्त के बाद (भाग–1), संपा. दीक्षित दनकौरी, पृष्ठ–70
10.हिन्दी ग़ज़ल पंचदशी (भाग–1), संपा. – डॉ. रोहिताश्व अस्थाना, पृष्ठ–106
11.ग़ज़ल – दुष्यन्त के बाद (भाग–1), संपा. दीक्षित दनकौरी, पृष्ठ–261
12.हिन्दी ग़ज़ल पंचदशी (भाग–1), संपा. – डॉ. रोहिताश्व अस्थाना, पृष्ठ–143
13.ग़ज़ल – दुष्यन्त के बाद (भाग–1), संपा. दीक्षित दनकौरी, पृष्ठ–198
14.ग़ज़ल – दुष्यन्त के बाद (भाग–1), संपा. दीक्षित दनकौरी, पृष्ठ–131
15.ग़ज़ल – दुष्यन्त के बाद (भाग–2), संपा. दीक्षित दनकौरी, पृष्ठ–459
16.ग़ज़ल – दुष्यन्त के बाद (भाग–1), संपा. दीक्षित दनकौरी, पृष्ठ–112
17.ग़ज़ल – दुष्यन्त के बाद (भाग–2), संपा. दीक्षित दनकौरी, पृष्ठ–457
18.ग़ज़ल – दुष्यन्त के बाद (भाग–1), संपा. दीक्षित दनकौरी, पृष्ठ–77
19.ग़ज़ल – दुष्यन्त के बाद (भाग–1), संपा. दीक्षित दनकौरी, पृष्ठ–155
20.ग़ज़ल – दुष्यन्त के बाद (भाग–1), संपा. दीक्षित दनकौरी, पृष्ठ–41
21.साये में धूप – दुष्यन्त कुमार , पृष्ठ–23
22.हिन्दी ग़ज़ल पंचदशी (भाग–4), संपा – रोहिताश्व अस्थाना, पृष्ठ–61
23.ग़ज़ल – दुष्यन्त के बाद (भाग–1), संपा. दीक्षित दनकौरी, पृष्ठ–71
24.ग़ज़ल – दुष्यन्त के बाद (भाग–1), संपा. दीक्षित दनकौरी, पृष्ठ–99
25.ग़ज़ल – दुष्यन्त के बाद (भाग–1), संपा. दीक्षित दनकौरी, पृष्ठ–62
26.हिन्दी ग़ज़ल यात्रा (भाग–2), संपा – डॉ. गिरीराजशरण अग्रवाल, पृष्ठ–111
27.प्रोत्साहन – जीवितराम सेतपाल , पृष्ठ–18
28.प्रोत्साहन – जीवितराम सेतपाल , पृष्ठ–21
29.हिन्दी ग़ज़ल पंचदशी (भाग–2), संपा – रोहिताश्व अस्थाना, पृष्ठ–68
30.आवाज हिन्दुस्तान की – मधुकर शैदाई , पृष्ठ–21

# Publish Research Article
# International Level Multidisciplinary Research Journal
# For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

## Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

## Associated and Indexed,USA

- Google Scholar
- EBSCO
- DOAJ
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Indian Streams Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.net